Unorganised Labour Action School (ULAS)

Training for Empowering Informal Workers in South Asia

Centre for Labour Research and Action

Supported by Rosa Luxemburg Stiftung

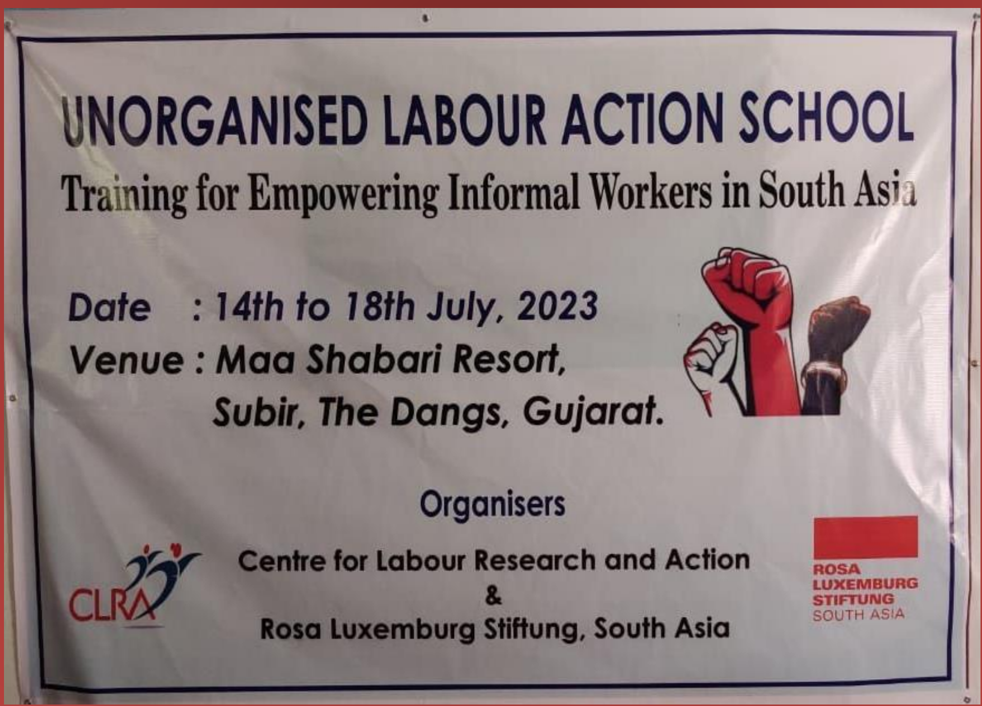

2023

CLRA

ROSA LUXEMBURG STIFTUNG SOUTH ASIA

असंगठित श्रमिक एक्शन स्कूल

दक्षिण एशिया में असंगठित श्रमिकों का सशक्तिकरण

जुलाई 14 -18, 2023 : सुबीर, डांग, गुजरात

सहभागियों के लिये मैन्युअल

CLRA

ROSA LUXEMBURG STIFTUNG SOUTH ASIA

विषय सूचि

आभार, बुनियादी सूचनाएं और सहभागियों की जिम्मेदारी

पहला दिन

संभागियों का आपसी परिचय, पराशिक्षण का परिचय, आयोजन, और व्यवस्था की जानकारी।

दूसरा दिन

असंगठित मजदूरों का संगठन- निर्माण के पहलू

आगेवान (लीडर) बनाम उत्प्रेरक (एक्टिविस्ट/फेसिलिटेटर) का महत्व और भूमिका

संगठन निर्माण में संचार का महत्व- भाग-1

1. **सुनियोजित बातचित/वार्तालाप के छ: कदम**
2. **शब्दों/वाक्यों का उपयोग बनाम भावार्थ**

तीसरा दिन

संगठन निर्माण में संचार का महत्व- भाग-2 अनिच्छुक और विरोधी श्रमिकों और नेताओं से सुनियोजित बातचित

चौथा दिन

संगठन बनाने में संरचना/ढांचा निर्माण के सिद्धांत, प्रक्रियाएं और जांच के पहलू

पाँचवा दिन

असंगठित मजदूरों के संगठन निर्माण के पहेलू और चुनौतियोंको समझ कर कार्य पद्धति और कार्य योजना का संचालन

आभार

भारत के मजदूर के संगठन कर्ता/संगठक को संगठित करने के कला-कौशल को विकसित करने तथा उन्हें संगठन बनाने में प्रभावी बनाने के उद्देश्य से असंगठित श्रमिक एक्शन स्कूल **'दक्षिण एशिया में असंगठित श्रमिकों का सशक्तिकरण'** का यह पहला प्रत्यक्ष प्रशिक्षण कर रहा है। इससे पहले दो ऑनलाइन प्रशिक्षण आयोजित हो चुके। इस प्रशिक्षण का नेतृत्व **सेंटर फॉर लेबर रिसर्च एंड एक्शन** कर रहा है, एवं रोजा लक्जम्बर्ग स्टीफ़टुंग इसका आयोजक है। यह स्कूल 'शक्ति के लिये संगठन' की अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला की विधि से प्रेरित है, अपितु यह असंगठित मजदूरों पर केंद्रित है।

मजबूत मजदूर आन्दोलन निर्माण करने के उद्देश्य से इस मैन्युअल का उपयोग करने एवं अपनी नेतृत्व क्षमता विकसित करने के लिये इसे अपनी स्थिति के अनुरूप ढालने की इच्छा का हम स्वागत करते हैं। हम आपसे इस मैन्युअल को बेहतर बनाने के लिये सुझाव आमंत्रित करते हैं ताकि भविष्य में होने वाली कार्यशाला में उसका उपयोग किया जा सके।

इस कार्यशाला का पाठ्यक्रम मुख्यरूप से जेन मेक्लेवी, जो अमेरिका और यूरोप में अनेक मज़दूर आंदोलन की मार्गदर्शक है, के विचारों से बनाया गया है और साथ ही 'शक्ति के लिये संगठन' कार्यशाला की प्रणाली पर आधारित है। इसके प्रमुख प्रशिक्षकों में प्रीति ओज़ा, सुधीर कटियार व अनेक सहयोगी प्रशिक्षक शामिल है। कार्यशाला का वित्तीय सहयोग रोज़ा लक्जम्बर्ग स्तिफ्तुंग कर रहा है।

कुछ बुनियादी सूचनाएं और सहभागियों की जिम्मेदारी:

'दक्षिण एशिया में असंगठित श्रमिकों का सशक्तिकरण' स्कूल का वर्तमान प्रशिक्षण प्रत्यक्ष रूप से जुलाई 14-18, 2023 को सुबीर, जिला डांग, गुजरात में आयोजित है।

1. सहभागियों से सभी सत्रों और छोटे-समूहों के चर्चा सत्र में शामिल होने की अपेक्षा की जाती है।
2. छोटे समूह का सत्र संवादात्मक और सहभागी स्वरूप का होगा। समूहों में कार्य इस प्रशिक्षण की मुख्य पद्धति होगी। हर समूह में एक संकलन कर्ता प्रशिक्षक होंगे।
3. वर्तमान प्रशिक्षण में छोटे समूह में अभ्यास के अलावा नियमित प्रत्यक्ष फील्ड कार्य सम्मिलित और अनिवार्य है।
4. इस मार्गदर्शिका को समग्र पढ़ने के अलावा हर सत्र के आयोजन से पहले उस सत्र की जानकारी कर लेवें ।
5. प्रशिक्षण के अंत में मूल्यांकन प्रस्तुत करने की अपेक्षा की जाती है। जिससे अगले प्रशिक्षणों मे सुधार संभव हो।
6. प्रशिक्षण जुलाई 14, 2023 को दोपहर 2 बजे से जुलाई 18, 2023 की दोपहर 2 बजे तक चलेगा।

पहला दिन

संभागियों का आपसी परिचय, प्रशिक्षण का परिचय, फील्ड की पहचान, आयोजन और व्यवस्था की जानकारी।

परिकल्पना :- नव-उदारवाद ने व्यक्तिवाद को जन्म दिया है। कार्यकर्ता को कार्यकर्ता के खिलाफ करके और बांटकर पूंजीपति शासन करते हैं। यही कारण है कि अच्छी यूनियन और मजबूत मजदूर वर्ग संगठन, बहुत मायने रखता है। श्रमिकों को संगठित करने और लामबंद करने और यूनियन बनाने पर काम करने के लिए निम्नलिखित संरचना (कार्य व्यवस्था) तैयार किया गया है। जैसा कि हम समझते हैं कि सत्ता (पॉवर) के लिए अधिक व् प्रभावी भागीदारी एक महत्वपूर्ण और आवश्यक अंग है। लेकिन इसके आलावा: एकता (विभाजन के खिलाफ), मजबूत संरचना और दिखने लायक और टिकाऊ बहुमत की भी आवश्यकता है।

शक्ति संरचना विश्लेषण: उच्च वर्ग के लोग हमेशा शासन करेंगे यह मानकर नहीं चला जा सकता। सत्ता का विरोध और उसे चुनौती दिया जा सकता है सत्ता का निर्माण किया जा सकता है। हर अभियान में 'डर' का होना स्वाभाविक है। परन्तु इसके लिये संगठक को सुव्यवस्थित प्रक्रियाएं करना होगा, जिसके पहलु संक्षिप्त में इस प्रकार है:-

A. सबसे सुरक्षित संपर्कों से बाहर निकलें व आगे की ओर बढ़ें।
B. हमें अपना ज्यादातर समय उन लोगों के साथ बात करने में बिताना चाहिए जो हमसे बात नहीं कर रहे हैं और ऐसा करने के लिए हमारे पास एक योजना होनी चाहिए।
C. नेता की पहचान के लिये आपको सटिक बातचीत करना सीखना है और
D. 90% उपलब्धि प्राप्त करने के लिए लोगों को अपने तरफ करने में सक्षम होना चाहिए।

सिखने का उद्देश्य:

1. इस कार्यशाला की आवश्यकता क्यूँ ?
2. असंगठित क्षेत्र के मजदूरों को एकजुट करते हुए, संगठन बनाने के मुख्य आयाम
3. जेन मेकेलेबी के विचारों पर चर्चा
4. व्यवस्था संबंधित चर्चा

संगठन निर्माण की मुख्य अवधारणाएँ/आयाम:

1 **कार्यक्षेत्र व्यवस्था बनाम मुद्दा आधारित**: दो तरह की संरचनाओं में संगठन निर्माण किया जाता है, एक जो कार्यक्षेत्र व्यवस्था पर आधारित होता है, जैसे कि निर्माण कार्य, ईंट-भट्टा, खेत मजूरी, इत्यादि और दूसरा जो मुद्दा आधारित होता है, जैसे कि पर्यावरण, महिलाएं और बच्चे इत्यादि।

2 **नेता बनाम कार्यकर्ता (क्षमता बनाम प्रतिबद्धता):** एक आयोजक का काम सबसे अधिक प्रभाव वाले व्यक्ति नेता/आगेवान की पहचान करना सिखाना है, न कि वह व्यक्ति जो मात्र यूनियन का समर्थक है। एक मजबूत संगठन बनाने के लिए दोनों प्रकार के लोगों कि भूमिका आवश्यक हैं, और एक को दूसरे की तुलना में चुनाव नहीं किया जा सकता।

3 **बहुसंख्यक बनाम अल्पसंख्यक:** बराबरी में आने के लिये हम बड़ी संख्या में होना ही आधार है, 'पावर = संख्या'। वर्तमान में तो अल्पसंख्यक आमिर /पूंजीपति समुदाय ही शक्तिशाली बना हुआ है।

4 **सभी कार्यकर्ता बनाम समुदाय-मजदूर गठबंधन:** असंगठित क्षेत्र के मजदूरों को संगठित करने के लिये उनका बृहद समुदाय एक प्रमुख भूमिका निभाता है, जिसे समझना आवश्यक है।

5 **संगठन बनाम लामबंदी / सक्रियता/जुटाना:** विरोध पक्ष/ मालिक/ नियोजक पहले से ही संगठित होंगे और उनके पास संसाधन भी होगा। उनके समक्ष मात्र एकजुट होना पर्याप्त नहीं, पर एक व्यवस्थित टिकाऊ संगठन बनाना अनिवार्य है

दूसरा दिन

असंगठित मजदूरों का संगठन- निर्माण के पहलू

A.आगेवान (लीडर) बनाम उत्प्रेरक (एक्टिविस्ट/फेसिलिटेटर) का महत्व और भूमिका

परिकल्पना नेता और कार्यकर्ता दोनों महत्वपूर्ण हैं। और दोनों ही अलग-अलग भूमिकाएं निभाते है। किसी नेता को बाहर से कोई नहीं चुन सकता, केवल कार्यकर्ता ही चुनाव कर सकते हैं।

सीखने का उद्देश्य:

1. मजदूरों के साथ कार्यरत नेतृत्वकर्ता एवं उत्प्रेरक में अंतर, और नेतृत्व की पहचान करने के महत्वपूर्ण बिंदु।

B. संगठन निर्माण में संचार का महत्व- भाग-1

1. **सुनियोजित बातचित/वार्तालाप के छ: कदम**
2. **शब्दों/वाक्यों का उपयोग बनाम भावार्थ**

परिकल्पना : सभी मज़दूर समझ पाएं कि उनकी सक्रिय भागीदारी के बगैर किसी भी तरह का बदलाव संभव नहीं है। संगठकों एवं कार्यकर्ताओं द्वारा संवाद में उपयोग किये गए शब्द का महत्व है, क्योंकि शब्द विशेष भावार्थ संचारित करते हैं। संवाद के समय कुछ शब्दों को लेकर खास तौर पर ध्यान देना चाहिए, जिनसे मजदूरों को उनके होने का अहसास के साथ अपनत्व की भावना बने। वार्तालाप में उपयोग किए जाने वाले सभी शब्दों का शब्दार्थ स्पष्ट होना चाहिए, क्योंकि उनका भावार्थ महत्वपूर्ण है । इस सत्र के ज़रिये आप मजदूरों से बातचीत करते समय कैसे उन्हें केंद्र में रख सकते है, इन पहलुओं को सीखेंगे।

सीखने का उद्देश्य:

1. संगठन निर्माण के लिए 6 स्तरीय संवाद का उद्देश्य और महत्व। एसी संरचित संवाद के छः कदमों की जरुरत को सहभागी समझे।
2. संगठकों एवं कार्यकर्ताओं द्वारा संवाद में उपयोग किये गए शब्द का महत्व और भावार्थ समझना।

सुनियोजित बातचित के छः कदमोंका संक्षिप्त परिचय

1. परिचय: वार्तालाप और उसे संयोजित करनेवाले का परिचय और संदर्भ

2. मुद्दे को समझना (और आंदोलन की दिशा में ले जाना): उन विशिष्ट मुद्दों के बारे में जानकारी प्राप्त करें जिनकी वे परवाह करते हैं। 70/30 सुनना/बात करना

3. शिक्षा/दृष्टिकोण (यूनियन एक जरिया): एक यूनियन कैसे काम करती है, इसके बारे में तकनीकी और मुख्य चीज़ों को समझाना (अधिकांश मजदूरों को पता नहीं है कि यूनियन कैसे काम करता है)

4. सवाल/मुद्दे को लेकर आना / मुद्दों को एक ढांचा देना: प्रश्न पूछें और फिर से बात करने से पहले उनके उत्तर की प्रतीक्षा करें, भले ही वह शांत हो जाए-जिसे लंबी, असहज चुप्पी भी कहते हैं

5. मुद्दों को पूरी तरह से दिमाग में डालना (सवालों का टिका लगाते रहना): सुनिश्चित करें कि श्रमिक उसके मालिक व प्रबंधन की शक्ति और नियंत्रण के बारे में समझ रहा है

6. अगले चरण की ओर बढ़ना/ आगे गतिविधि करने के लिये जिम्मेदारी देना: उनके साथ त्वरित कार्य योजना बनाएं और कुछ दीर्घावधि की योजना भी बनाएं

तीसरा दिन

संगठन निर्माण में संचार का महत्व- भाग-2 अनिच्छुक और विरोधी श्रमिकों और नेताओं से सुनियोजित बातचित

परिकल्पना : क्योंकि यहाँ सवाल नेताओं को अपने पक्ष में करने, उन्हें सहमत कराने एवं उन्हें अपनी तरफ जीत लानेका है, ना कि सिर्फ कार्यकर्ताओं को अपने पक्ष में करने का है। लोगों से जुड़े नेताओं को अपने पक्ष में करने के लिए संवाद आसान नहीं है, यह संवाद मजदूरों एवं कार्यकर्ताओं जो आपसे पहले से ही सहमत हैं, से कहीं ज्यादा जटिल है। यह संवाद इस बात पर ध्यान केंद्रित करेगा कि मुश्किल-से-मानने वाले, अनिच्छुक लोगों को कैसे प्रभावित किया जाए। उनमें से कई जमीनी नेता हो सकते हैं, क्यूंकि नेताओं में ही सवाल करने की समझ होती है और उनके पास पहले से ही वो होता है जो वो चाहते है।
इस सत्र में अनिच्छुक मजदूरों से बात करना और उनके सवालों को सही दिशा में ले जाने की चर्चा होगी। आपतियों को सही दिशा कैसे दें ? " कभी कुछ नहीं बदलेगा" की भावनाओं के साथ काम कैसे करें? इत्यादि पहलुओं पर चर्चा करेंगे।

नेतृत्व को जीतने के लिये संरचित संवाद के 6 कदमों का संचालन अपने साथी मजदूर एवं कार्यककर्ताओं के साथ संवाद की तुलना में काफी असहज करने वाला होता है।

सीखने का उद्देश्य:

इस सत्र में निम्नलिखित बातों को समझना होगा:

1. **क्या संगठन करने के लिये बातचीत करना अन्य बातचित से अलग होती है?**
2. **हम बातचित में संरचना का उपयोग क्यों करते हैं?**
3. **विरोधियों के साथ संचार – आपतियों को दूर करना**
4. **विरोधियों के साथ सुनियोजित / संरचित बातचित के छः कदम कैसे क्रियान्वित करे ?**

चौथा दिन

संगठन बनाने में संरचना/ढांचा निर्माण के सिद्धांत, प्रक्रियाएं और जांच के पहलू

1. शक्ति बनाने के लिये मजदूरों/लोगों का सभी कार्यस्थलों पर एक मजबूत ढांचा बनाना होगा।
2. कार्यस्थल/ में मजबूत ढांचा बनाने के लिये पहले सत्रों से मिले कौशल जैसे नेतृत्व की पहचान, शब्द भावार्थ ज्ञान एवं सुनियोजित संवाद की मदद लें।

सिखने के उद्देश्य:

1. मजबूत, प्रभावी संरचना बनाने के तरीके: मैपिंग बनाम चार्टिंग प्रक्रियाओं को समझना
   - A. मैपिंग: जिस स्थल पर लोग, या विभाग या इकाइयाँ, स्थित हैं वहां मैपिंग करके, सभ्यों का डाटा संग्रहित/संकलित कैसे करे ?
   - B. चार्ट बनाना: मानव सामाजिक संबंधों को समझना और सुलझाना : बहुत सारी सूचनाओं को समझने के लिए सरल तकनीक का इस्तेमाल करते हुए , प्रभावकारी तरीका कैसा होना चाहिए?
2. संरचना की जांच व जांच हेतु प्रमाण

   संरचना की जांच हमारे संगठन की मजबूती/आधार का और मालिकों को संकेत देते हैं कि हम लड़ने और जीतने के लिए तैयार हैं। इससे पहले कि हम हड़ताल के लिए तैयार हैं, कई संरचनात्मक जांच किए जाने चाहिए।

   - A. संरचना/ढांचागत प्रक्रियाओं की जांच क्यूँ?
   - B. संरचना की जांच के प्रकार को समझना

पाँचवा दिन

1. ***असंगठित मजदूरों की स्थिति, और उनके संगठन निर्माण के विषम पहेलू और चुनौतियोंको समझ कर कार्य पद्धति और कार्य योजना का संचालन कैसे करें यह समझना ?***
2. ***ULAS 3 प्रशिक्षण का मूल्यांकन***

MEETING WITH O4P INTERNATIONAL TEAM

SHARING EXPERIENCE OF CLRA'S UNORGANISED LABOUR ACTION SCHOOL TRAINING (ULAS)-- EMPOWERING INFORMAL WORKER'S IN SOUTH ASIA

BACKGROUND: - Based on Jane McAleavy's philosophy and strategy of labour unionising for winning, elucidated in her extensive article, No Shortcuts and her broad experience of working and strategizing for unions' demands for better work and wage conditions mainly in USA and Europe, **Organising For Power (O4P)** was designed as an effective on-line training module for all union organisers across the world. Most of McAleavy's intervention has been with the organised sector workers, It was important for persons organising in those parts of the world where labour works mostly under informal conditions and is largely unorganised, as for example in South Asia, that O4P module be developed and executed with the objective to understand and practice with this class of workers. Thus, Centre For Labour Research And Action, an organisation working for the rights and welfare of such a labour class was inspired to study the same principles of organising as in O4P, in the context of unorganised workers, and develop a training module for the same. After two fairly successful online trainings, a need for actual in person training was expressed by some participants, that included hands on/real time field experience. Thus, a well-planned training course, drawing upon the general principles of communicating with and collectivising such workers along with an awareness of the characteristics of such workers and the nature of their working conditions; and exposure to actual worker's situation was designed for all organisers working with the informal workers in any sector. As such the challenges of implementing the O4P module in areas and the sectors where participants work, in organising unorganised labour, were additionally addressed, and a 5 dates/days program was designed. Organisers associated with Union's supported by CLRA, and several participants from other groups joined the training conducted mainly in Hindi.
DESIGN AND TEAM EXECUTION OF THE MODULE: - The module was designed to include considerable field exposure to real time workers'- seasonal migrant sugarcane harvesters of Dang district, presently at source, who were to migrate to the South Gujarat sugarcane farms with their contractors in the coming 5-6 months, and stay in shabby squatter settlements, on the outskirts of farms and villages for the next six months. As the direct field exposure with the workers is key to learning and understanding principles and practices of organising, field visits were well integrated. Earlier in the day O4P theory was discussed, and afternoons into early evenings were for field trips. As such this module was a tightly knit learning process. Some Learning materials were given at commencement, while most learning materials were given a day in advance or during and before training sessions. Lodging, Boarding and training facilities were all organised in house, residential.
METHODS AND SUPPORT TRAINERS: - Many participants themselves were working in the labour welfare, organising, and research sectors and a participatory module that enabled participation was envisaged so that their experiences could enrich the training inputs. Such a module requires a set of effective facilitators/support trainers who can manage group work in more controlled classroom situation, capture nuances, and help participants effectively learn from the field exposure. The module incorporated such methodologies that enabled participatory and mutual learning more by practice than theory. Thus, besides panel presentations by main trainers, participatory training methods such as role play, debates, fish bowl, group work and group presentations, and three intensive field work sessions were organised. Field visits were planned in advance by the local organisers, and logistical support was managed.

ORGANISATION OF SESSIONS

DAY/DATE	*TIME RANGE*	*TOPIC*	*METHODS/ACTIVITIES*	*COMMENT*
First day – 14 July 2023	2.00-6.00pm	Introduction sessions ➢ of Participants, ➢ of the Training Program ➢ and Logistics, with half hour tea break.	Introduction in pairs Exercise in pairs for intro - Basic info of each participant name/place/education - Nature of organisation - Nature of the participant's work - Learning Needs Pairs introduce each other in the whole group Debrief for range of experience and learning needs PPT and lecture of core concepts and theory and strategies of Jane McAleavy - 'No Shortcuts'	Needs emerged for understanding the organising process based on the discussion of socio-economic analysis of such labourers.
	6.00-7.00pm	Free time		
	7.00-8.00pm	Dinner		
	8.00-9.30pm	Life and work situation of sugarcane harvesting labourers	Documentary film and discussions with key organisers	
Second, third, and fourth day – 15, 16, 17 July 2023	6.00-6.45am	Yoga and Meditation		Voluntary
	6.45am	Tea		
	8.00-8.30am	Breakfast		
	8.30-9.00am	Warm-up/Ice breakers and songs and Recap		

	9.00am-1.00pm	Morning Sessions on O4P Theory and Practice in groups		Each Session about 90 minutes each. Session to be presented digitally on screen mostly. Insist on song before every session.
Second day – 15 July 2023		Basic principles of communication for organising Role and key characteristics of worker leader v/s activist/organiser Intro to six steps of structured conversation for organising	PPT Brief intro to six stepped structured conversation and details re: identifying leaders and activists Case study on local agriculture labourers and their leaders Debate by groups formed based on leader chosen; why was the leader chosen Debrief and discussion marked on charts in panel on different roles of leader and activist.	Field exercise In the new village, the organisers had to undertake structured conversation, observe the principles of communication and help form a village committee, and give responsibility to involve the labourers in collective action to get higher prices in the coming season and prepare a village committee for this. There should be a special effort to identify influential persons, leaders, activists and convince them to form a committee Keep in mind 1- principles of communication 2-Follow the 6 steps to a well-planned conversation, and identify potential leaders and catalysts.
Third day – 16 July 2023		Special status and history of tribal district Dang, and its implication for the tribal community residing there. Detailed understanding of the six steps of structured conversation for organising, with focus on hesitant and opposing workers and Semantics.	Lecture by local activist PPT Role plays in fish bowl exercise. Good and bad communicators. Debrief Small group worked on one sentence each for semantics, while panel corrected mistakes.	Field exercise In the new village, the organisers have to communicate to the labourers for collective action to get higher prices in the coming season and prepare a village committee for this. There should be a special effort to identify the opposing or unwilling Mukkaddam, labourer, influential person and convince them to be on their side. Keep in mind that 1- words with appropriate meaning should be used. 2-Follow the 6 steps to a well-planned conversation, and identify potential leaders and catalysts.
Fourth day – 17 July 2023		Why semantics is so important?	Interactive lecture	Field Exercise

		Understanding the theory and practice of mapping and charting Structure tests	PPT on mapping and charting with examples. Exercise of mapping/charting the previous days data	In the new village, the organisers have to communicate to the labourers for collective action to get higher prices in the coming season and prepare a village committee for this. There should be a special effort to identify the opposing or unwilling Mukkaddam, labourer, influential person and convince them / to be on their side. Keep in mind that 1- words with appropriate meaning should be used. 2-Follow the 6 steps to a well-planned conversation, and identify potential leaders and catalysts. 3- Map and chart the process and identify the elements for structure test
	10-11.00am	Half hour tea break		
	12.30-1.00 pm	Pre-formed groups discussed to prepare for village field visit and its dynamics related to the theory session of the day		
	1.00-2.00pm	Finish lunch and leave as group of 4 to 5 for stipulated village field visit		
	2.00-5.00pm	Complete field visit and return		Travel time included
	5.00 -6.00pm	Tea, and each group charts the field visit outcomes.		
	6.00-6.30pm	Free time		
	6.30-8.00pm	Panel presentation and debrief by groups on field visits		Presentation on charts based on communication principles followed and gaps identified. Debrief Women's participation gap identified and corrected on 16, 17, July

	8.00-9.00PM	Dinner		
	8.30- 10.00pm	Documentary / Cultural Program		Voluntary
Fifth day – 18 July 2023	6.00-6.45am	Yoga and Meditation		Voluntary
	6.45am	Tea		
	8.00-8.30am	Breakfast		
	8.30-8.45am	Warm-up/Ice breakers and songs		
	8.45-1.00pm	Morning Sessions on 1)Challenges In Organising Workers Of Informal Sectors. 2) Support to the Dang Organiser's team to plan for a long campaign in organising the harvesters to demand stipulated wages before they migrate to other districts with labour contractors 3) Evaluation Of Training	Brief discussion on unorganised sector. Presentation and course correction of plan by Dang team and suggestions and support by other unions for the campaign Written evaluation in Hindi/Gujarati and English	
	10-11.00am	Half hour tea break		
	1.00-2.00pm	Lunch		
	2.00 onwards	Leave to return home.		

Centre for Labour Research and Action (CLRA)

Centre for Labour Research and Action

Centre for Labour Research and Action (CLRA) promotes workers' rights in the vast informal sector economy of India. It undertakes research to document the work conditions in the informal sector followed by policy advocacy with the state so that the workers receive their due entitlements. The centre has done pioneering work in documenting the seasonal migration streams that feed labour to labour intensive industries like agriculture, brick kilns, building and construction. Its work has facilitated development of an alternative paradigm of organizing workers that factors in the constant movement of workers, the critical role of middlemen, the nature of production process, and the socio- economic profile of workers

Rosa Luxemburg Stiftung-South Asia

Rosa Luxemburg Stiftung

The Rosa Luxemburg Stiftung (RLS) is German- based foundation working in South Asia and other parts of the world on the subjects of critical social analysis and civic education. It promotes a sovereign, socialist, secular, and democratic social order, and aims to present members of society and decision- makers with alternative approaches to such an order. Research organizations, groups working for social emancipation, and social activists are supported in their initiatives to develop models that have the potential to deliver social and economic justice.

Disclaimer: "Sponsored by the Rosa Luxemburg Stiftung with funds of the Federal Ministry for Economic Cooperation and Development of the Federal Republic of Germany. This publication or parts of it can be used by others for free as long as they provide a proper reference to the original publication." The content of the publication is the responsibility of the partner Centre for Labour Research and Action, and does not necessarily reflect a position of RLS.